प्रतिदर्श प्रश्नपत्र - 2, 2021-22

द्‍वितीय सत्र

विषय- हिंदी 'ए' (कोड-002)

निर्धारित समय : 2 घंटे **पूर्णांक : 40**

सामान्य निर्देश :

- इस प्रश्नपत्र में दो खंड हैं–खंड 'क' और 'ख'।
- सभी प्रश्न अनिवार्य हैं, यथासंभव सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार ही लिखिए।
- लेखन कार्य में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखिए।
- खंड–'क' में कुल 3 प्रश्न हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए इनके उपप्रश्नों के उत्तर दीजिए।
- खंड–'ख' में कुल 4 प्रश्न हैं, सभी प्रश्नों के साथ विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार विकल्प का ध्यान रखते हुए चारों प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड–'क' (पाठ्यपुस्तक व पूरक पाठ्यपुस्तक) 20 अंक

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 25-30 शब्दों में लिखिए– **$2 \times 4 = 8$**

(क) 'लखनवीं अंदाज़' पाठ में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

(ख) भारत आने का कारण पूछने पर फादर बुल्के क्या उत्तर देते थे?

(ग) 'बिना कथ्य के कहानी लिखना संभव नहीं है' इस कथन को लखनवी अंदाज़ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(घ) फादर के मुख से निकले शब्द जादू का काम कैसे करते थे?

उत्तर– (क) लखनवी अंदाज़ पाठ के माध्यम से लेखक ने नवाबों की जीवन-शैली पर व्यंग्य किया है। ये लोग वास्तविकता से दूर भागते हैं और दिखावे का जीवन जीते हैं। वास्तव में ऐसी जीवन-शैली पतन की ओर ले जाती है। जीवन दिखावे से नहीं यथार्थ में रहने से चलता है। हमें दिखावे से दूर रहकर सत्य आधारित जीवन जीना चाहिए।

(ख) फादर बुल्के भारत आने का कारण प्रभु की इच्छा बताते थे। वे लेखक से बताया करते थे, "माँ ने तो मेरे बचपन में ही हाथ से निकल जाने की घोषणा कर दी। मेरी संन्यासी (पादरी) बनने की इच्छा न जाने कैसे तीव्र होती गई और इंजीनियरिंग की अंतिम वर्ष की पढ़ाई को बीच में ही छोड़कर संन्यास लेने की इच्छा से मैं धर्मगुरु के पास पहुँच गया और नियमानुसार भारत जाने की इच्छा व्यक्त की। फिर मैं संन्यास लेकर भारत चला आया।"

(ग) 'लखनवी अंदाज़' पाठ में नवाबों के समाप्त होते अस्तित्व और उनके दिखावा करने पर व्यंग्य किया गया है। खीरों को मात्र सूँघकर नवाब साहब का पेट भर जाना उनकी पीड़ा को भी प्रदर्शित करता है कि कभी इतने ठाट-बाट थे कि ऐसी सामान्य वस्तुओं को केवल सूँघने तक ही उपयोग में लाते थे। फिर खीरे बिना खाए सूँघकर फेंकना और डकार लेना कितना हास्यास्पद है। क्या सूँघने मात्र से पेट भर सकता है? यह उसी प्रकार असंभव है जैसे बिना कथ्य के कहानी लिखना।

(घ) फादर के मन में सभी के लिए अपनत्व व करुणा का भाव था। वे मानव के दुख को समझते थे। सभी को अपना बनाने के लिए उनकी बाँहें खुली रहती थीं। वे जब अत्यंत ही स्नेह से बात करते तो परिचितों पर उन अगाध प्रेम भरी बातों का जादुई असर होता था। उदाहरण के लिए, जब लेखक की पत्नी और पुत्र की मृत्यु हुई तो फादर ने अगाध स्नेह के साथ उन्हें जो सांत्वना भरे शब्द कहे, उससे लेखक को परम शांति का अनुभव हुआ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं <u>तीन</u> प्रश्नों के उत्तर 25-30 शब्दों में लिखिए– **$2 \times 3 = 6$**

(क) 'उत्साह' कविता में 'नवजीवन वाले' किसे कहा गया है? और क्यों कहा गया है?

(ख) इस सत्र में पढ़ी गई किस कविता में बेटियों के संबंध में नए मूल्य स्थापित करने का प्रयास किया गया है?

(ग) आपके द्‍वारा पढ़ी गई किस कविता में कवि ने प्रकृति के किसी अंग का आह्वान किया है और क्यों?

(घ) इस सत्र में पढ़ी गई किस कविता में माँ बेटी को समझाती है और क्या-क्या समझाती है?

उत्तर– (क) 'नवजीवन वाले' विशेषण का प्रयोग कविता में दो बार किया गया है। पहली बार 'नवजीवन वाले' विशेषण का प्रयोग बादलों के लिए किया गया है क्योंकि बादलों की विशेषता है कि तप्त धरती के ताप को शांत कर प्रकृति को नया जीवन देते हैं। प्रकृति की प्रफुल्लता के साथ-साथ इनके द्वारा पशु-पक्षी, मानवों तक में नवीन उत्साह का संचार होता है। अत: इस संदर्भ में बादलों को 'नवजीवन वाला' कहना उपयुक्त है।

दूसरी बार कवि ने इसका प्रयोग स्वयं के लिए किया है। वह स्वयं भी निराशा में आशा का संचार बनाए रखने के लिए लोगों को प्रेरित करता है। अत: कवि के लिए भी 'नवजीवन वाले' कहना सार्थक है।

(ख) 'कन्यादान' कविता के माध्यम से कवि स्त्री-जगत् के मन में समायी भावना 'कन्या तो दान के लिए है' से मुक्त होकर नए मूल्य स्थापित करने की प्रेरणा दे रहा है। कन्या बेचारी है, निरीह है, स्त्री जाति मात्र उपयोग के लिए है–ऐसी प्रचलित भावनाओं से नारी जाति को मुक्त होने के लिए प्रेरित कर रहा है।

कवि के अनुसार 'नारी सौंदर्य की प्रतिमूर्ति है' की कोमल भावना से नारी को मुक्त होकर ऐसे आदर्श स्थापित करने उचित हैं, जिनमें मानव-जगत् के मन में पल रही दकियानूसी भावनाएँ पलायन कर जाएँ।

(ग) 'उत्साह' एक आह्वान गीत है, जिसके माध्यम से कवि ने बादल को संबोधित किया है। बादल निराला का प्रिय विषय है। कविता में बादल एक तरफ़ पीड़ित-प्यासे जन की अभिलाषा पूरा करने वाला है, तो दूसरी तरफ़ वही बादल नई कल्पना और नए अंकुर के लिए विप्लव, विध्वंस और क्रांति की चेतना को संभव करने वाला भी है। कवि जीवन को व्यापक दृष्टिकोण से देखता है। कविता में ललित कल्पना और क्रांति-चेतना दोनों हैं। सामाजिक क्रांति या सामाजिक परिवर्तन में साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। निराला इसे 'नवजीवन' और 'नूतन कविता' के संदर्भों में देखते हैं। कवि निराला ने बादल के माध्यम से मानव को प्रोत्साहित किया है, उसके उत्साह को प्रेरित किया है।

(घ) 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को निम्नांकित सीख दी–

(*i*) अपनी सुंदरता और कोमलता पर आत्म-मोहित मत होना।

(*ii*) आग का प्रयोग रोटियाँ सेंकने के लिए करना, जलने के लिए नहीं।

(*iii*) वस्त्र-आभूषणों के भ्रम में मत पड़ना।

(*iv*) लड़की बनी रहना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना।

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए– **$3 \times 2 = 6$**

(क) 'माता का अँचल' पाठ में माँ के प्रति अत्यधिक लगाव न होते हुए भी भोलानाथ माँ के अँचल में ही प्रेम और शांति पाता है। इसका आप क्या कारण मानते हैं?

(ख) रानी एलिज़ाबेथ के दरज़ी की परेशानी का क्या कारण था? उसकी परेशानी को आप किस तरह तर्कसंगत ठहराएँगे?

(ग) 'साना-साना हाथ जोड़ि...' पाठ में लेखिका द्वारा प्रदूषण बढ़ने के कारणों का ज़िक्र करते हुए बताइए कि इसे रोकने में आप अपना योगदान किस प्रकार से दे सकते हैं?

उत्तर– (क) बच्चे का अपनी माँ के साथ अद्‌भुत संबंध होता है। बच्चे अपने पिता की अपेक्षा अपनी माँ से अधिक स्नेह करते हैं। किसी भी प्रकार की विपदा आने पर वे अपनी माँ की शरण में ही स्वयं को सुरक्षित समझते हैं। जिस प्रकार कहानी का मुख्य पात्र भोला अधिकांश समय अपने पिता जी के साथ ही रहता है, लेकिन मुसीबत के समय वह अपनी माँ के शरण में ही जाता है। एक दिन जब वह साँप को देखकर डर से भागने लगता है तो लहूलुहान हो जाता है। काँटे लगने से उसके पैर छलनी हो जाते हैं। वह रोते-रोते घर में घुसता है। पिता जी उसे अपने पास बुलाने के लिए पुकारते रहते हैं, लेकिन वह भागकर माँ के आँचल में छिप जाता है और स्वयं को सुरक्षित महसूस करता है। इससे पता चलता है कि प्रत्येक बच्चे का अपनी माँ से भावनात्मक लगाव बहुत अधिक होता है। माँ भी बच्चे के मन के भावों को सरलता से समझ लेती है।

(ख) रानी के दरज़ी की परेशानी थी कि हिंदुस्तान, पाकिस्तान और नेपाल के दौरे पर रानी कब क्या पहनेंगी? उसे यह भी ध्यान रखना था कि रानी की इज़्ज़त में किसी तरह की कोई कमी न आए। रानी की आन-बान के साथ-साथ उसकी जीविका भी जुड़ी हुई थी। रानी स्वदेश छोड़कर दूसरे देशों के दौरे पर जा रही थीं। वहाँ जाकर क्या पहना जाए, यह चुनाव ज़रूरी था। वेशभूषा ऐसी हो, जिससे रानी के पद की गरिमा झलके। वहाँ के लोग उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हों। रानी की वेशभूषा में किसी तरह की कोई कमी न रह जाए, इसलिए दरज़ी की परेशानी अपनी जगह बिलकुल ठीक है।

(ग) सिक्किम की अपनी यात्रा के दौरान लेखिका ने सोचा कि उसे लायुंग में बर्फ़ देखने को मिल जाएगी, लेकिन एक सिक्किमी युवक ने बताया कि प्रदूषण के कारण अब बर्फ़ गिरनी कम होती जा रही है। इस बढ़ते प्रदूषण के अनेक कारण हैं; जैसे–यातायात के विभिन्न साधनों से निकलता गर्म धुआँ, फ़ैक्ट्रियों तथा थर्मल प्लांटों से निकलने वाला धुआँ, कूड़ा-करकट तथा अन्य अवशिष्ट पदार्थों को जलाना, भोजन बनाने के लिए उपले, लकड़ियाँ, कोयला आदि को जलाना, वायुयानों का शोर, जल-स्रोतों का दूषित होना, उर्वरकों तथा कीटनाशकों का प्रयोग आदि। बढ़ते प्रदूषण को रोकने के लिए मैं जन-जागरूकता फैलाना चाहूँगा। उन्हें पॉलीथीन का प्रयोग न करने, कूड़ा-करकट तथा अवशिष्ट पदार्थ न जलाने, सार्वजनिक वाहनों का प्रयोग करने, अधिकाधिक पेड़ लगाने, उनकी देखभाल करने तथा प्रकृति से निकटता बढ़ाने का आग्रह करूँगा। इसके अलावा मैं लोगों से यह भी कहूँगा कि वे जल-स्रोतों को साफ़-सुथरा बनाए रखें।

खंड–'ख' (रचनात्मक लेखन) 20 अंक

4. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए। (5)

(क) **प्रदूषण की समस्या**

संकेत-बिंदु– • प्रदूषण के कारण • औद्योगिक क्रांति • शहरों में बढ़ते अनेक प्रकार के प्रदूषण • बिगड़ता मौसम-चक्र • प्रदूषण की रोकथाम के उपाय।

(ख) **विज्ञापन और हमारा जीवन**

संकेत-बिंदु– • विज्ञापन का उद्देश्य • विज्ञापन के विविध प्रकार • विज्ञापन की भूमिका • विज्ञापन का सामाजिक दायित्व।

(ग) **वर्तमान समाज में नारी का योगदान**

संकेत-बिंदु– • भूमिका • नारी के विभिन्न रूप • वर्तमान समाज में नारी की भूमिका • नारी नवचेतन का प्रतीक • उपसंहार।

उत्तर– (क) मनुष्य विकासशील और विवेकशील प्राणी है, पर महत्वाकांक्षी भी है। इसने शीघ्र विकास कर लेने के लिए प्रकृति की सभी तरह से अनदेखी की है। विकास की होड़ में पर्यावरण-संतुलन की अनदेखी के कारण आज मानव जाति को प्रदूषण की अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। स्वच्छ वायु, स्वच्छ जल, उर्वर मिट्टी और संतुलित ध्वनि का सभी ओर अभाव है। औद्योगिक क्रांति के बाद पूरी दुनिया धीरे-धीरे प्रदूषण की चपेट में आ गई है। वायु प्रदूषण के कारण वातावरण में कार्बन की मात्रा बढ़ गई है, जिससे लोगों को ठीक से साँस लेना भी मुश्किल हो गया है। ग्लोबल वार्मिंग की समस्या उत्पन्न हो गई है। उद्योगों का कचरा नदी, नालों और जलाशयों में बहाए जाने से जल प्रदूषण की भीषण समस्या उत्पन्न हो गई है। भारत में तीव्र गति से शहरीकरण हुआ है। शहरों में वाहनों के बढ़ते प्रयोग, उद्योगों के शोर, लाउडस्पीकर आदि ने ध्वनि को प्रदूषित कर दिया है। प्रदूषण के कारण न समय पर वर्षा आती है, न सर्दी-गर्मी का चक्र ही ठीक से चलता है। सूखा, बाढ़, ओला आदि प्राकृतिक प्रकोपों के कारण भी प्रदूषण बढ़ा है। प्रदूषण की रोकथाम का उपाय लोगों के हाथों में है। अत: इसे जनचेतना से भी रोका जा सकता है। यद्यपि सरकार भी अपने स्तर पर प्रयास कर रही है; जैसे–हरियाली को बढ़ावा देना, वृक्ष उगाना, शोर पर नियंत्रण करना, कूड़े-कचरे का ठीक से प्रबंधन करना और उन्हें जलाशयों व नदियों से दूर रखा जाना आदि। ये उपाय सरकार के साथ-साथ जनता को भी अपनाने चाहिए। समय रहते अगर मानव ने पर्यावरण की स्वच्छता के महत्व को नहीं समझा और अपनी महत्वाकांक्षा के कारण प्राकृतिक नियमों की अनदेखी करता रहा तो संपूर्ण मानव जाति को विनाश से बचा पाना मुश्किल ही नहीं असंभव हो जाएगा।

(ख) किसी भी वस्तु, व्यक्ति या विचार के प्रचार-प्रसार को विज्ञापन कहते हैं। विज्ञापन का उद्देश्य श्रोता, पाठक या उपभोक्ता के मन पर गहरी छाप छोड़ना है ताकि वह उससे प्रभावित हो सके। विज्ञापन अनेक प्रकार के होते हैं। सामाजिक विज्ञापनों के अंतर्गत दहेज, नशा, परिवार-नियोजन आदि संदेश आते हैं। विभिन्न कार्यक्रमों, रैलियों, आंदोलनों के विज्ञापन भी इसके अंर्तगत आते हैं। कुछ विज्ञापन विवाह, नौकरी, संपत्ति की खरीद-बेच संबंधी आते हैं। सबसे लोकप्रिय और लुभावने विज्ञापन होते हैं–व्यापारिक विज्ञापन। उद्योगपति अपने माल को दूर-दूर तक बेचने के लिए अत्यंत आकर्षक विज्ञापनों का प्रयोग करते हैं। विज्ञापन खरीददारी में अहम् भूमिका निभाते हैं। ग्राहक प्रसिद्ध वस्तुओं के विज्ञापन को देख व सुनकर उन्हें खरीदता है। चाहे अन्य श्रेष्ठ उत्पाद वहाँ मौजूद क्यों न हों। विज्ञापन प्रभावकारी होते हैं, इसलिए उनका सामाजिक दायित्व भी बहुत बड़ा होता है। प्राय: माल बेचने के लिए भ्रामक विज्ञापन दिए जाते हैं। गलत व दूषित माल बेचने के लिए भी आकर्षक फ़िल्मी सितारों का उपयोग किया जाता है। विज्ञापनों में समाज को प्रभावित करने की अद्भुत शक्ति है। ये सरकार, व्यापार तथा समाज के लिए वरदान हैं, परंतु गलत हाथों में पड़कर इनका दुरुपयोग भी हो सकता है। इस दुरुपयोग से बचा जाना चाहिए।

(ग)

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नभ पग तल में,
पीयूष स्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।

भारत तो प्राचीन काल से ही गार्गी, अनुसूया, अत्रि, मैत्रेयी, सीता, सावित्री जैसी विदुषी महिलाओं से भरा रहा है। इतिहास साक्षी है, जब-जब जहाँ-जहाँ शक्ति और बुद्धि की आवश्यकता पड़ी, वहाँ-वहाँ नारी ने अपना अमूल्य सहयोग एवं बलिदान दिया। प्राचीन काल की ये नारियाँ रही हों या इंदिरा गांधी, कल्पना चावला, सरोजिनी नायडू जैसी आधुनिक महिलाएँ, सभी ने अपने-अपने हिस्से का योगदान देकर समाज को समृद्ध किया है। शिशु की प्रथम शिक्षिका बन वह समाज के लिए एक उत्तम चरित्रवान नागरिक बनाती है। कदम-कदम पर उसका मार्गदर्शन कर उसे प्रेरित करती है। कहा भी गया है—प्रत्येक सफल मनुष्य के पीछे किसी-न-किसी रूप में एक नारी का ही हाथ होता है। बंद दरवाजों के पीछे घुटती, सिसकती नारी की आहें अपशगुन को ही निमंत्रण देती हैं—कहा भी गया है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:।' नारी ईश्वर की बनाई हुई भावुक कृति है, प्राकृतिक रूप से कोमल होने पर भी वह शक्ति की स्रोत है। यही कारण है कि सृष्टि को जन्म देने का कार्यभार प्रकृति ने उसे ही सौंपा है। स्त्री और पुरुष गृहस्थी रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। समाज के निर्माण में नारी की भी वही भूमिका है जो एक पुरुष की है। वर्तमान समाज में नारी की दोहरी भूमिका हो गई है, वह जहाँ घर में रहकर व्यवस्थापक की भूमिका निभाती है, वहीं वह पुरुष के साथ कदम-से-कदम मिलाकर देश व समाज के लिए उपयोगी निर्माण कार्यों में लगी है। समाज का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहाँ नारी ने अपनी उपस्थिति दर्ज नहीं कराई। अब वह स्वयं शिक्षित होकर शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार कर रही है। देश की राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, सक्रिय कार्यकर्ता, नेता, विभिन्न कंपनियों की व्यवस्थापिका होना उसके उपलब्धियों का सशक्त प्रमाण है। आज वह न्यायालयों में अपने हक की गुहार लगाती लाचार व बेबस स्त्री नहीं रह गई है बल्कि जज की कुर्सी पर बैठकर कानून की मोटी-मोटी किताबों को पढ़कर निर्णय सुनाती है। उसने अपने अदम्य बल, शक्ति व साधना से इस पुरुष प्रधान समाज को चुनौती दे दी है। नारी नवचेतना व नवजागृति की प्रतीक बन गई है। अब नारी को गुमराह करना आसान नहीं। 'कोमल है कमज़ोर नहीं शक्ति का नाम ही नारी है।'

5. नैनीताल में सैर-सपाटे के दौरान एक स्थानीय विद्यार्थी आनंद से आपकी मित्रता हो गई। उसने पर्वतीय गाँवों के जन-जीवन से भी आपका परिचय कराया। अपने घर लौट आने पर उस मित्र का आभार व्यक्त करते हुए लगभग 120 शब्दों में एक पत्र लिखिए। (5)

अथवा

चुनाव के दिनों में कार्यकर्ता घरों, विद्यालयों आदि की दीवार पर चुनावी पोस्टर लगा जाते हैं। इससे लोगों को होने वाली असुविधा पर विचार व्यक्त करते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को लगभग 120 शब्दों में एक पत्र लिखिए।

उत्तर– क०ख०ग० कॉलोनी
नई दिल्ली
02 जनवरी, 20××
मित्र आनंद
मधुर स्मृतियाँ।
मैं यहाँ सानंद रहते हुए आशा करता हूँ कि तुम भी ईश्वर-कृत कृपा से सानंद होगे। मुझे तुम्हारे साथ नैनीताल में बिताए गए वे क्षण पुन:-पुन: याद आ जाते हैं। जब भी मैं अपने परिवार में या अपने साथियों से नैनीताल की यात्रा के बारे में बातें करता हूँ तो तुम्हारी याद आए बिना नहीं रहती।
मैं तुम्हारा किन शब्दों में आभार प्रकट करूँ, आभार के लिए शब्द भी कम पड़ते हैं। तुमने मेरे साथ रहकर जिस आत्मीयता से वहाँ की अपनी संस्कृति और जन-जीवन का परिचय कराया, उसके प्रति विशेष आभार प्रकट करता हूँ। प्राय: सैर-सपाटे के लिए गए व्यक्तियों का उद्देश्य मौज-मस्ती तक सीमित रहता है, किंतु तुम्हारा सान्निध्य पाकर वहाँ के जन-जीवन की दिनचर्या और व्यथाओं से भी परिचय हुआ। स्नेही आनंद! जब कभी दिल्ली आओ तो मुझे अवश्य याद करना। दिल्ली के प्रमुख स्थलों का हम साथ-साथ भ्रमण करेंगे। अच्छा पुन: नमस्ते!
पत्र की प्रतीक्षा में–
तुम्हारा अभिन्न हृदय
च०छ०ज०

अथवा

परीक्षा भवन
दिल्ली
दिनांक : 20 फरवरी, 20××
संपादक महोदय
दैनिक जागरण
सोनीपत
विषय–पोस्टरों से होने वाली असुविधा के संबंध में।
मान्यवर
मैं आपके समाचार-पत्र के माध्यम से सरकार तथा संबद्ध अधिकारियों का ध्यान चुनाव के दिनों में विभिन्न राजनैतिक दलों के द्वारा लगाए

जाने वाले पोस्टरों की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ।

सभी राजनैतिक दल चुनाव के दिनों में घरों, विद्यालयों आदि पर नारे लिख देते हैं या पोस्टर चिपका देते हैं। कार्यकर्ता बिना लोगों की परवाह किए एक के बाद एक कई पोस्टर दीवारों पर चिपका देते हैं, जिससे आम लोगों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। लोगों के घरों की दीवारें खराब हो जाती हैं। चुनाव समाप्त होने पर भी इन पोस्टरों को उतारा नहीं जाता।

अतः पुलिस प्रशासन के सहयोग से कार्यकर्ताओं को घरों की दीवारों पर पोस्टर लगाने से मना करना चाहिए। ऐसा करने वालों के लिए दंड निर्धारित होना चाहिए। कृपया करके मेरे इस पत्र को अपने समाचार-पत्र में स्थान दें, ताकि सभी लोग व पुलिस प्रशासन जागरूक हो सकें।

धन्यवाद।

प्रार्थी

नीतेश

6. (क) आपके मोहल्ले में नया पब्लिक स्कूल खुला है। उसके लिए लगभग 50 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए। (2.5)

अथवा

आपके पड़ोस में पैशन जिम खुला है। युवाओं को आकर्षित करने एवं यहाँ आने के लिए प्रेरित करते हुए लगभग 50 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर–

खुल गया!! खुल गया!! खुल गया!!

आपके नन्हे-मुन्नों का भविष्य उज्ज्वल करने के लिए

उत्तम शिक्षा
मामूली फीस

हैप्पी पब्लिक स्कूल

हवादार कमरे, खेल का बड़ा मैदान, प्रयोगशाला, लाइब्रेरी।

प्रशिक्षित एवं अनुभवी अध्यापक

संपर्क करें– 09590×××××

अथवा

खुल गया!! खुल गया!! खुल गया!!

क्या आप आकर्षक और सुंदर दिखना चाहते हैं। तो आइए...

पैशन जिम

अपने शरीर को ग्रेट खली जैसा बनाएँ

पहले प्रवेश लेने वाले 10 लोगों की फीस में भारी छूट

संपर्क करें–9811××××××

(ख) विद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा निर्मित हस्तकला आधारित वस्तुओं की बिक्री हेतु आयोजित प्रदर्शनी के प्रचार हेतु लगभग 50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए। (2.5)

अथवा

'हरियाली' पौधशाला के पौधों की बिक्री बढ़ाने हेतु लगभग 50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर–

लिटल एंजल्स स्कूल

में वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर

नन्हे बच्चों के प्रोत्साहन हेतु
उनके द्वारा निर्मित सामान खरीदें।

मुख्य आकर्षण :

- विशिष्ट बच्चों द्वारा निर्मित दीपक। • गुलदस्ते।
- कागज़ के फूलों की झालर। • कलात्मक मोमबत्तियाँ।

संपर्क– बंदेपुर रोड, आईटीआई चौक, सोनीपत।

अथवा

आओ धरा को सुंदर बनाएँ आओ हरियाली फैलाएँ

हरियाली नर्सरी

फल-फूल एवं छाया देने वाले छोटे-छोटे पौधे उपलब्ध

10 पौधे के साथ 2 पौधे फ्री

संपर्क करें–011 232×××××××

7. (क) गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य पर समस्त देशवासियों को लगभग 40 शब्दों में शुभकामना संदेश लिखिए। (2.5)

अथवा

तुम्हारा मित्र राज्य की क्रिकेट टीम में चुना गया है। इसके लिए अपने मित्र को लगभग 40 शब्दों में बधाई संदेश लिखिए।

उत्तर–

गणतंत्र दिवस हेतु शुभकामना संदेश

26 जनवरी, 20××

प्रात: 6:00 बजे

प्रिय देशवासियो!

सभी देशवासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। युवा भविष्य के निर्माता होते हैं, इसलिए आज इस शुभ अवसर पर हम सभी युवाओं को देशहित में समर्पित रहने हेतु दृढ़ संकल्प लेना चाहिए, जिससे हम अपने देश को सर्वशक्तिशाली बना सकें।

देवबंधु

अथवा

बधाई संदेश

15 जून, 20××

प्रिय मित्र नकुल!

राज्य की क्रिकेट टीम में चुने जाने के लिए ढेर सारी बधाइयाँ।

मैं सदा ईश्वर से यही कामना करता हूँ कि तुम इसी प्रकार से परिवार का नाम रोशन करो, तरक्की करो, जीवन में आकाश की बुलंदियों को छुओ। इसी प्रकार परिश्रम करते रहना और आगे बढ़ते रहना।

मेरा आशीष और दुलार सदा तुम्हारे साथ है।

तुम्हारा मित्र

अमन

(ख) अपनी सहेली को आने वाली ईद की शुभकामना देने के लिए लगभग 40 शब्दों में संदेश लिखिए। **(2.5)**

अथवा

आपके मित्र ने डॉक्टर की नौकरी छोड़कर अपना जीवन समाज सेवा हेतु समर्पित किया है। उसके इस नए जीवन के लिए लगभग 40 शब्दों में शुभकामना संदेश लिखिए।

उत्तर–

ईद पर ढेर सारी शुभकामनाएँ

ईद आई, संग खुशियाँ लाई।

हर तरफ़ प्रेम-प्यार की बहार आई।।

खुदा से दुआ है कि वह तुम्हारी ज़िंदगी को खुशियों और मिठास से भर दे।

परिवार के सभी लोगों को ईद मुबारक

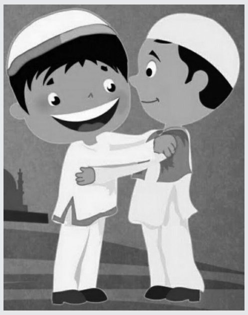

तुम्हारी

रजनी गोयल

अथवा

बधाई संदेश

13 अप्रैल, 20××

प्रिय हिमांशु

तुम वास्तव में विशाल हृदय के एक साहसी इनसान हो। अच्छी-खासी नौकरी छोड़कर समाज-सेवा से जुड़ना तुम्हारा एक साहसिक निर्णय है। मुझे तुम पर गर्व है। इस तपस्वी जीवन के लिए तुम्हें मेरी ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ। तुम्हारा जीवन सार्थक और सफल बने।

तुम्हारा मित्र

गोपाल